: द्वितीय अध्याय :

" मनोविज्ञान : स्वरूपगत विवेचन"

: द्वितीय अध्याय :

मनोविज्ञान : स्वरुपगत विवेचन

हिंदी में `मनोविज्ञान` शब्द का प्रयोग सामान्यत: अँग्रेजी के `सायकालॉजी` (Psychology) के पर्यायवाची के रूप में किया जाता है तथा यह प्राय: उन्हीं अर्थों को सूचित करता है जो `सायकालॉजी` में निहित है। 'Psychology' शब्द 'psycho' (साइक अर्थात आत्मा) एवं 'logas' (लोगस अर्थात विज्ञान या विचार-विमर्श) के योग से बना है। अत: इस दृष्टि से वह `आत्मा का विज्ञान` या आत्मा संबंधी विज्ञान का द्योतक सिद्ष होता है किंतु आधुनिक युग में इसका यह अर्थ प्रचलित नहीं है। प्राचीन युग में यूनानी आचार्यों ने अवश्य ही इसे `आत्मा-का विज्ञान` माना था, किंतु अब तो आत्मा ही लुप्त हो गया है - विशेषत: विज्ञान के क्षेत्र में `आत्मा` शब्द निरर्थक है। ऐसी स्थिति में यह स्वाभाविक ही था कि 'Psychology' शब्द का भी अर्थ परिवर्तित हो जाना अब इसे सामान्यत: मन, चेतना और व्यवहार से ही संबंधित माना जाता है।

2.1 मनोविज्ञान की परिभाषा :-

साहित्य हो या विज्ञान तथा व्यवहार अथवा मानव जीवन से संबंधित कोई भी बात हो, विद्वान , आलोचक तथा आम पाठक तक उसे अपने विचारों से परिभाषित करने का प्रयास करता है। यह प्रवृत्ति मनुष्य की जिज्ञासा एवं अध्ययन का प्रतिफल ही है। किसी व्यक्ति का नामकरण तक इसी प्रवृत्ति की उपज है। अत: इस मायने में `मनोविज्ञान` को जिन विद्वानों ने परिभाषित किया है वे परिभाषाएँ इस प्रकार हैं ------

2.1.1 **डॉ. हरदेव बाहरी `शिक्षक हिंदी शब्दकोश` में मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए लिखते हैं -** ``मनोविज्ञान वह विज्ञान या शास्त्र है जिसमें मानव मन की विभिन्न अवस्थाओं और क्रियाओं का तथा उनके प्रभावों का अध्ययन किया जाता है।``[1] बाहरी जी मनोविज्ञान में मानव मन की अवस्थाएँ एवं उसकी विभिन्न क्रियाओं को ही प्रधानता प्रदान करते हैं।

2.1.2 `आधुनिक हिंदी शब्दकोश` के अनुसार - ``मनोविज्ञान मन से संबंधित वह विज्ञान है जिसमें मनुष्य की मनोवृत्तियों, क्रियाओं, व्यवहारों और विभिन्न प्रभावों का विवेचन होता है।``[2]

2.1.3 डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त -----डॉ. गुप्त मानसिक पक्ष से संबंधित विभिन्न तथ्य और उसका वैश ।ानिक पद्धति से किये अध्ययन को ही मनोविज्ञान का विषय बनाते हुए लिखते हैं ---``मनोविश ।ान वह विषय है जिसमें मानसिक पक्ष से संबंधित तथ्यों व तत्वों का अध्ययन वैज्ञानिक पद्धति से प्रस्तुत किया जाता है।``[3]

2.1.4 लालजीराम शुक्ल के अनुसार -``मनोविज्ञान वह विज्ञान है जो मन की चेतन और अचेतन क्रियाओं का अध्ययन अपरोक्ष अनुभूति द्वारा तथा मनुष्य की बाह्य -क्रियाओं का निरीक्षण करके करता है।``[4]

2.1.5 डॉ. कमला आत्रेय मनोविज्ञान को मन का विज्ञान मानते हुए लिखती हैं ---``मनोविज्ञान मन का विज्ञान है। मनोविज्ञान के द्वारा ही मानव-मन तथा उसके कार्यों को समझा जा सकता है। किसी व्यक्ति ने किन भावनाओं से प्रेरित होकर कार्य किया तथा उनके तथाकथित व्यवहार के क्या कारण हैं ? इन प्रश्नों का उत्तर केवल मनोविज्ञान के द्वारा ही प्राप्त हो सकता है।``[5] परिवर्तन सृष्टि का नियम है। कालपरिवर्तन के साथ हर एक चीज में परिवर्तन होता रहता है। इसी नियम के तहत आधुनिक मनोविज्ञान में भी परिवर्तन अपेक्षित है, इस दृष्टि से आत्रेय जी आधुनिक मनोविज्ञान की नई परिभाषा स्थापित करते हुए लिखती हैं - ``आधुनिक मनोविज्ञान व्यक्ति की मानसिक शक्तियों जैसे - चेतना, स्मृति, कल्पना आदि का वैज्ञानिक परीक्षण करके उनका समुचित विकास करता है, व्यक्ति के जीवन संबंधी कार्यों व व्यवहारों का अध्ययन करता है तथा उन्हें भविष्य के लिए योजनाबद्ध कर व्यक्ति की उन्नति का साधन प्रस्तुत करता है।``[6]

इसी प्रकार अन्य भारतीय विद्वानों ने भी मनोविज्ञान को परिभाषाबद्ध करने का प्रयास किया है। भारतीय विद्वानों ने मनोविज्ञान की परिभाषाओं को देखने के पश्चात पाश्चात्य विद्वानों ने दी मनोविज्ञान की परिभाषाओं का अध्ययन करना मैं अधिक उचित समझता हूँ।

2.1.6 प्लेटो :- ``मनोविज्ञान आत्मा का विज्ञान है।``[7] प्लेटो मनोविज्ञान को आत्मा का विज्ञान बताते

हैं, परंतु वर्तमान परिस्थिति में साइंस के निकष पर आत्मा (soul) का अस्तित्व ही ग्राह्य नहीं माना जाता।

2.1.7 जेस्म :- ``मनोविज्ञान की सर्वोत्तम परिभाषा यह दी जा सकती है कि वह चेतना की स्थिति या अवस्था की व्याख्या एवं विवेचना प्रस्तुत करनेवाला विज्ञान है।``[8]

2.1.8 मैकूगल :- ``मनोविज्ञान मानव-मन (मस्तिष्क) का विज्ञान है।``[9]

2.1.9 पिल्सवरी :- ``मनोविज्ञान की सर्वाधिक संतोषजनक परिभाषा यह की जा सकती है कि वह मानव-व्यवहार का विज्ञान है।``[10]

2.1.10 वुडवर्थ :- ``मनोविज्ञान वह विज्ञान है जो व्यक्ति के क्रियाकलापों का अध्ययन वातावरण के संदर्भ में करता है।``[11]

2.1.11 A Dictionary of Psychology :- के अनुसार- **"The branch of biological science which studies the phenomena of conscious life in their origin, development and manifestations, and employing such methods as or available and applicable to the particular field of study or particular problem with which the individual scientist is engaged-----"**[12]

2.1.12 The Oxford English Dictiononary :- के अनुसार - **"The science of the nature, functions and phenomena of the human mind (formerly also of the soul)"**[13]

उपर्युक्त मनोविज्ञान की भारतीय एवं पाश्चात्य परिभाषाओं का अध्ययन करने के पश्चात सार रूप में संक्षेप में हम कह सकते हैं कि - ``मनोविज्ञान वह विज्ञान है जिसमें मामव-मन तथा उसके कार्यों की सैद्धांतिक और व्यावहारिक दृष्टि से सर्वांगीन व्याख्या की जाती है।``

2.2 मनोविज्ञान का स्वरुप :-

आधुनिक मनोविज्ञान के इतिहास को जानने के लिए अतीत के दर्शन पर दृष्टिपात करना

अनिवार्य हो जाता है। यूनानी दार्शनिकों ने आत्मा के स्वरुप तथा व्यवहार को ज्ञात करने के लिए अनेक प्रयत्न किए हैं। आत्मा संबंधी अध्ययन को इस समय मानसिक दर्शन के नाम से पुकारा गया। कुछ दार्शनिकों ने मन को अंतर्ज्योति के रूप में देखा। प्लेटो ने मन तथा विचारों को अभिन्न माना, अरस्तु के अनुसार मन शारीरिक व्यापार है। इस प्रकार विभिन्न मतभेदों के होते हुए भी मन के रहस्यों को जानने के लिए प्रयत्न होते रहे, परंतु मनोविज्ञान का रूप दार्शनिक ही रहा, वैज्ञानिक नहीं।

मनोविज्ञान के प्रति आधुनिक दृष्टिकोण का उन्मेष सर्वप्रथम 16 वीं -17 वीं शताब्दी के महान चिंतकों - डेकार्टे, स्पाइनोजा, लॉक, प्रभृति में दृष्टिगोचर होता है। डेकार्टे (1596-1660) ने मन की व्याख्या करते हुए अनेक नूतन स्थापनाएँ प्रस्तुत की। एक तो उन्होंने यह प्रतिपादित किया कि मनुष्य और पशु के व्यवहार में अंतर का कारण विवेक है, अर्थात मनुष्य के व्यवहार विवेक से परिचलित होता है, जब कि पशु या पशुवत मनुष्य के व्यवहार में ऐसा नहीं होता। दूसरे, उन्होंने स्पष्ट किया कि आत्मा शरीर से तथा चेतना स्नायुमंडल से भिन्न है तथा ये अपने -अपने ढंग से कार्य करते हुए एक-दूसरे को प्रभवित करते हैं या यों कहिए कि इनमें परस्पर क्रिया- प्रतिक्रिया का संबंध रहता है। चेतना का अस्तित्व उन्होंने शरीर में स्वीकार किया किंतु उसका शरीर के किसी स्थान-विशेष या अंग विशेष में निवास है- इसे स्वीकार नहीं किया। इसीलिए उन्हें द्वैतवादी विचारक माना जाता है। इसके विपरीत स्पाइनोज ने अद्वैतवादी विचारों को प्रतिपादित करते हुए बताया कि चेतना, मन, शरीर आदि एक ही वस्तु के विभिन्न पक्ष हैं, अत: इनमें तात्विक दृष्टि से कोई अंतर नहीं।

- जान लॉक की मनोविज्ञान के क्षेत्र में सबसे बड़ी देन है।उनके `साहचर्य सिद्धांत` अनुसार हमारे मन की समस्त सामग्री साहचर्य या संपर्क द्वारा अर्जित या सीखी हुई है। बालक जन्म के समय मानसिक तत्वों- विचारों से शून्य होता है किंतु ज्यों-ज्यों वह समाज के संपर्क में आता हैं त्यों-त्यों साहचर्य या अनुभव के द्वारा वह नये-नये तत्त्व ग्रहण करता जाता है। जिससे उसके मस्तिष्क का विकास होता जाता है। अठाहरवीं-उन्नीसवीं शती में भी अनेक विद्वानों द्वारा मन और शरीर के संबंध लेकर अनेक सिद्धांतों की स्थापना की गयी जिनमें प्रमुखता द्वैतवादी दृष्टिकोण की थी। इसके संदर्भ में डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त लिखते हैं - ``कुछ विद्वानों ने मानव-मस्तिष्क की व्याख्या यंत्र (मशीन) के समानंतर- रूप में करते हुए प्रतिपादन किया कि मानव-मन का संचालन नाड़ी-तंत्र (Sensory nerves), मेरुदंड (spinal cord)

गतिवादी नाड़ियों (motor nerves) की क्रियाओं द्वारा होता है तथा इनके कारण जो क्रिया मस्तिष्क में घटित होती है, उसी के समानंतर क्रिया चेतना में घटित होती है -इसीलिए इस विचारधारा को `समानांतर वाद` (Parallelism) की संज्ञा दी गयी है।``[14]

मनोविज्ञान को प्रयोगात्मक एवं वैज्ञानिक स्वरुप प्रदान करने का श्रेय वुण्ट को है, जिन्होंने भौतिक विज्ञान, जीवन विज्ञान एवं शरीर-रचना विज्ञान की पद्धतियों से प्रभावित होकर 1879 ई. में लिपजिंग में एक मनोविज्ञानिक प्रयोगशाला स्थापित की तथा इसमें मानव-व्यवहार का अध्ययन विज्ञान की प्रयोगात्मक पद्धति (experimental method) से करके यह सिद्ध किया कि मनोविज्ञान की अध्ययन पद्धति को भी वैज्ञानिक रूप दिया जा सकता है। वुण्ट की सफलता ने यूरोप और अमरिका के अनेक प्रमुख वैज्ञानिकों का ध्यान आकर्षित कर लिया तथा उन्होंने भी इस पद्धति को अपनाने का प्रयास किया।

उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम चरण में और भी कई ऐसे प्रयोग हुए जिनकी सफलता ने मनोविज्ञान के मनोविज्ञानिक स्वरुप के विकास में योग दिया। डारविन के चचेरे भाई फ्रान्सिस गॉल्टन ने ब्रिटेन के प्रतिभाशाली व्यक्तियों का अध्ययन करके यह प्रतिपादित किया कि प्रतिभा जन्मजात होती है। उनके निष्कर्ष से भी अधिक महत्त्वपूर्ण उनकी अध्ययन पद्धति थी जिसने अन्य अध्येताओं का मार्ग प्रदर्शन किया। इसी शताब्दी में विलियम जेम्स ने अपनी महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों द्वारा मनोविज्ञान को आगे बढ़ाने में योग दिया। बिसवीं शती में मनोविज्ञान के क्षेत्र में पावलोव, वॉटसन, मैक्लूगल, थार्नडाइक, वर्दीमर, कोहलर, फ्रायड, युंग, एडलर जैसी प्रतिभाओं का अवतरण हुआ जिन्होंने मनोविज्ञान की विभिन्न शाखाओं की स्थापना करते हुए उसे एक सुविकसित एवं प्रौढ वैज्ञानिक विषय के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया।

2.2.1 मनोविज्ञान की शाखाएँ :-

आज `मनोविज्ञान` अत्यंत विकसित रूप धारण कर चुका है, जिसकी व्यापकता एवं गंभीरता का अनुमान केवल इस बात से लगाया जा सकता है कि इसकी बीस से भी अधिक अलग- अलग शाखाएँ हैं जिसमें विभिन्न दृष्टिकोणों से न केवल मानव-मन अपितु पशुओं तक के मानसिक क्रिया-कलापों का अध्ययन वैज्ञानिक पद्धति द्वारा किया जा रहा है। मनोविज्ञान को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है - (1)सैद्धांतिक मनोविज्ञान और (2) व्यावहारिक मनोविज्ञान। सामान्य मनोविज्ञान में विभिन्न प्रयोगों

एवं परीक्षणों के आधार पर मनोविज्ञान के सामान्य सिद्धांतों की स्थापना की जाती है, जबकि व्यावहारिक मनोविज्ञान में स्थापित सिद्धांतों के आधार पर विभिन्न मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों, प्रवृत्तियों एवं समस्याओं का अध्ययन प्रस्तुत किया जाता है। अब ज्यों- ज्यों मनोविज्ञान के अध्ययन क्षेत्र का विस्तार होता जा रहा है, त्यों -त्यों सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक मनोविज्ञान की भी अनेक शाखा-प्रशाखाओं का प्रस्फुटन एवं विकास होता जा रहा है।

2.2.1.1 सैद्धांतिक मनोविज्ञान :-

वर्तमान में सैद्धांतिक मनोविज्ञान की शाखाएँ यों परिलक्षित होती हैं ---

1. सामान्य मनोविज्ञान।
2. प्रयोगात्मक मनोविज्ञान।
3. पशु-मनोविज्ञान।
4. शारीरिक मनोविज्ञान।
5. बाल-मनोविज्ञान।
6. किशोर मनोविज्ञान।
7. वैयक्तिक मनोविज्ञान।
8. समाज मनोविज्ञान।
9. असामान्य मनोविज्ञान।
10. विकासात्मक मनोविज्ञान।
11. लोक मनोविज्ञान।

12. विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान।

13. मनोविश्लेषणात्मक मनोविज्ञान।

14. परा-मनोविज्ञान।

15. मनोभौतिक- विज्ञान।

इसी प्रकार व्यावहारिक मनोविज्ञान की भी शाखाएँ दृष्टिगोचर होती हैं।

2.2.1.2 <u>व्यावहारिक मनोविज्ञान</u> :-

1. शिक्षा- मनोविज्ञान।
2. औद्योगिक मनोविज्ञान।
3. व्यापार मनोविज्ञान।
4. सैन्य मनोविज्ञान।
5. चिकित्सा मनोविज्ञान।

2.3 मनोविज्ञान का सैद्धांतिक पक्ष :-

मनोविज्ञान के सैद्धांतिक पक्ष पर विचार करने से पहले यहाँ पर मनोविज्ञान के प्रवर्तक एवं उसके पथ-प्रदर्शक विद्वानों पर संक्षेप में विचार करना अधिक समीचीत रहेगा।

मनोविश्लेषणवाद के प्रवर्तक हैं सिगमण्ड फ्रायड। आधुनिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में मनोविश्लेषण का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। फ्रायड द्वारा प्रतिपादित मनोविश्लेषण मनोविज्ञान नितांत नवीन है, क्योंकि इसके पूर्व इस विषय की ओर किसी अन्य मनोवैज्ञानिक का ध्यान नहीं गया था। फ्रायड के पूर्व मन की चेतनावस्था को प्रमुख माना जाता था, परंतु फ्रायड ने मन के अचेतन अंश को अध्ययन का विषय बनाया। मनोविश्लेषण पद्धति ने व्यक्ति के शैशव काल की प्रवृत्तियों तथा परिस्थितियों को महत्त्व

दिया। मानसिक रोगों के कारण ज्ञात करके उनकी चिकित्सा करने में मनोविश्लेषण का महत्त्वपूर्ण योगदान है। मन के संदर्भ में फ्रायड के विचारों को स्पष्ट करते हुए कमला आत्रेय लिखती हैं - ``फ्रायड के अनुसार मन के तीन भाग हैं - अचेतन, अवचेतन तथा चेतन। मन का अधिकांश भाग अचेतन है। यद्यपि व्यक्ति के कार्य तथा व्यवहार इससे प्रभावित होते रहते हैं, परंतु उसे इसका ज्ञान नहीं होता। अरूचिकर तथा कष्टकर प्रसंगों को व्यक्ति भूलना चाहता है क्योंकि इनसे उनके अहम को ठेस लगती है, यह प्रक्रिया दमन है। दमन के द्‌वारा वे समस्त स्मृतियाँ अचेतन में चली जाती हैं, परंतु अज्ञात रूप से व्यक्ति इनसे प्रभावित रहता है।``[15]

फ्रायड के बाद एडलर का नाम लिखा जाता है। वह प्रारंभ में फ्रायड का अनन्य सहयोगी माना जात था, परंतु बाद में मतभेद हो जाने के कारण एडलर ने मनोविश्लेषण संप्रदाय से संबंध तोड दिया। फ्रायड की भाँति एडलर भी एक चिकित्सक था। एडलर ने फ्रांस के डाक्टर शार्को तथा बर्नहाइम की संमोहन विधि का अध्ययन किया था, परंतु फ्रायड की भाँति उसका अध्ययन गहन तथा विस्तृत नहीं था। डाक्टर शार्को के एक सहयोगी जानेट के विचारों से एडलर पर्याप्त रूप से प्रभावित थे। जानेट के अपूर्णता के भाव से प्रभावित होकर ही संभवत: एडलर ने शारीरिक अंगो के अभाव के सिद्‌धांत का प्रतिपादन किया। एडलर व्यक्ति के बाह्य परिवेश के महत्त्व को प्राथमिकता देता है। उसका कथन है कि बाह्य पर्यावरण के कारण व्यक्ति में अनेक परिवर्तनों का समावेश होता है। अत: बाह्य परिस्थितियों का प्रभाव व्यक्ति के आचार-विचारों पर पडना स्वाभाविक है।

`युंग` फ्रायड का सहयोगी तथा मनोविश्लेषण संप्रदाय का प्रमुख सदस्य था। वह प्रारंभ में फ्रायड का घनिष्ट मित्र रहा, परंतु बाद में सैद्‌धांतिक मतभेद के कारण पृथक हो गया। युंग का अध्ययन विस्तृत और गहन था। इसने अनेक देशों की यात्रा की और वहाँ की धार्मिक तथा सांस्कृतिक रीति-नीतियों का एवं उन देशों के निवासियों के मानसिक विकास का अध्ययन किया। उसकी रूचि धार्मिक गाथाओं, रहस्यवाद तथा संसार के विभिन्न धर्मों में थी। युंग ने चिकित्साशास्त्र का अध्ययन किया था। वह मन के स्थान पर `चित्त` शब्द का प्रयोग अधिक उपयुक्त तथा उचित मानता था। उसके अनुसार मन शब्द के अंतर्गत केवल चेतन मन का ही आभास प्राप्त होता है, परंतु चित्त शब्द अवचेतन मन को चेतना का पर्याय मानता है, इसीलिए उसने चित्त शब्द का प्रयोग भी उचित माना क्योंकि इससे चेतन, अचेतन दोनों का बोध

होता है।

2.3.1 फ्रायड के मनोविज्ञान का सैद्धांतिक पक्ष :-

मनोविश्लेषण के आचार्यों ने मानव मन को तीन खण्डों में विभाजित किया है। इन खण्डों का वैज्ञानिक रूप में अध्ययन करते समय डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त ने फ्रायड और युंग का वर्गीकरण सामने रखा है। अत: प्रस्तुत सिद्धांत पक्ष को देखते समय हम गुप्ताजी के विचारों को ग्रहण करते हैं। डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त के अनुसार -``मनोविश्लेषण के आचार्य मानव-मन को तीन स्तरों या खण्डों में विभक्त करते हैं - चेतन, अचेतन एवं उपचेतन। फ्रायड ने इन्हें क्रमश: अहं (Iego), इदम (Id) एवं नैतिकमन (Super ego) के नाम से पुकारा है तो युंग ने नया वर्गीकरण करते हुए मन के केवल दो ही स्तर माने हैं - चेतन (conscious) और अचेतन (unconscious) तथा चेतन मन के दो भेद (भाग) व्यक्तिगत अचेतन मन (personal unconscious) एवं सामूहिक अचेतन मन (collective unconscious) किए हैं। उपर्युक्त तीनों प्रकार के वर्गीकरण में स्थूल रूप में इस प्रकार सामंजस्य स्थापित किया जा सकता है ---

मन के स्तर		फ्रायड का नया वर्गीकरण		युंग का वर्गीकरण
1. चेतन	(conscious)	= अहं (Iego)	=	चेतन मन
2. अचेतन	(unconscious)	= इदम (Id)	=	अचेतन मन (सामूहिक अचेतन)
3. उपचेतन	(sub. conscious)	= नैतिक मन (Super ego)	=	व्यक्तिगत अचेतन मन

यद्यपि उपर्युक्त वर्गीकरण के अनुसार फ्रायड एवं युंग में मत-भेद परिलक्षित होते हैं परंतु यह मतभेद नामकरण की दृष्टि से अधिक है, लक्षणों की दृष्टि से उनमें बहुत कुछ मतैक्य है। जहाँ तक फलासृजन की प्रक्रिया का संबंध है, मनोविश्लेषण के विद्वानों ने इसे अचेतन मन (unconscious) से ही संबंधित किया है। प्राय: सभी ने अचेतन मन की शक्ति की अभिव्यक्ति के विभिन्न प्रकारों में से एक कलासृजन को माना है।``[16] प्रस्तुत वर्गीकरण के आधार पर हम मनोविज्ञान का विवेचन-विश्लेषण करेंगे। फ्रायड की मनोवैज्ञानिक पद्धति का अध्ययन हम निम्न शीर्षकों के अंदर कर सकते हैं -

1. अचेतन मस्तिष्क 2. लिबिडो 3. ग्रंथियाँ।

1. अचेतन मस्तिष्क :-

फ्रायड ने मन की विभिन्न दशाओं का गहन अध्ययन किया था। इस गहन अध्ययन के आधार पर उसने मन को तीन भागों में विभाजित किया - अचेतन, अवचेतन तथा चेतन। मन के इन तीन भागों में उसने अचेतन को प्रमुख माना है क्योंकि मन का अधिकांश भाग अचेतन है तथा अत्यल्प अंश चेतन है। अचेतन मन गतिशील है और समयानुसार चेतन मन को निर्देश करता रहता है। व्यक्ति के विचार व्यवहार तथा रहन-सहन की स्वाभाविक और अस्वाभाविक क्रियाओं का मूल कारण अचेतन मन ही है। चेतन मन के समस्त कार्य-व्यापारों का प्रेरणा-स्रोत- अचेतन मन है। अचेतन मस्तिष्क को और अधिक स्पष्ट करते हुए `रोगीमन` के रचनाकार मुंशी और सिन्हा के विचारों को डॉ. धनराज मानधाने यों लिखते हैं - ``हमारे व्यक्तित्व अथवा मन का वह अंश जिसका विकास रूका हुआ हो और जो बराबर किसी न किसी पिछड़ी दशा में ही पड़ा रहा हो वह है अचेतन मन। ---जितनी अनैतिक, अधार्मिक तथा असामाजिक इच्छाएँ तथा व्यवहार हम बचपन में करते हैं -- जिन्हें बड़े होकर हम स्वयं ही अपना कहने से इंकार करते हैं - ये अचेतन मन के निवासी होते हैं।``[17]

मनोविश्लेषण के अंतर्गत अचेतन का सम्बन्ध स्मृति से है। अचेतन मन स्मृतियों का भांडार है। जब हम किसी पुरानी अथवा विस्मृत स्मृति को पुन: याद करना चाहते हैं तब थोड़े से प्रयास के पश्चात ही हम उसे स्मरण करने में सफल हो जाते हैं। फ्रायड के अनुसार यह स्मृति अचेतन से अवचेतन में तथा उसके बाद चेतन में आ जाती हैं। अचेतन मन की क्रियाओं का ज्ञान व्यक्ति को प्रत्यक्ष रूप से नहीं होता परंतु इसकी गतिशीलता के कारण प्राय: व्यक्ति के समस्त मानसिक क्रिया-कलाप इससे प्रभावित होते हैं। अवचेतन मस्तिष्क को स्पष्ट करते हुए डॉ. कमला आत्रेय लिखती हैं - ``फ्रायड ने अचेतन मन को अत्यंत महत्त्व दिया है। व्यक्ति के जीवन-काल में अचेतन मन सदा सक्रिय रहता है। यद्यपि यह प्रत्यक्ष रूप से सम्मुख नहीं आता, परंतु मनुष्य जीवन का समस्त संचालन अचेतन के द्वारा ही होता है। अचेतन मन, मन का गुप्ततम भाग है। व्यक्ति के समस्त आचरण इसके द्वारा ही प्रेरित होते हैं। मानवजीवन की समस्त स्मृतियाँ तथा अनुभूतियाँ अचेतन मन में छिपी रहती हैं। जिनका उसे आभास भी नहीं होता। फ्रायड ने इन

समस्त इच्छाओं, स्मृतियों और कामनाओं का कारण अचेतन मन में खोजा। अचेतन में उसे यह कारण अतृप्त इच्छा, दमित वासना, अपूर्ण कामना, कुंठा, तिव्र लालसा तथा भग्न आकांक्षाओं के रूप दृष्टिगोचर हुए।``[18] हमारे व्यक्तित्व का विकास अचेतन मन पर ही आधारित है। किसी व्यक्ति के अज्ञात मन में विरोधी भावों के द्वंद्व से जितनी ही अधिक भावना-ग्रंथियाँ पड़ जाती हैं, उतना ही जटिल और संघर्षमय उसका जीवन हो जाता है। इसका सबसे अधिक प्रभाव विक्षिप्तावस्था और स्वप्नावस्था की क्रियाओं पर पड़ता है, परंतु इन क्रियाओं के निरीक्षण से हमें अज्ञात मन की इच्छाओं का पूरा ज्ञान नहीं होता। उसका कारण यह है कि इन सब क्रियाओं में हमारी अव्यक्त इच्छाएँ परोक्ष रूप में अर्थात प्रतीक के रूपों में प्रकट होती हैं। इसका कारण यह है कि चेतन और अचेतन के बीच एक प्रहरी बैठा हुआ है जो अवांछनीय विचारों को रोक देता है, क्योंकि इनकी अभिव्यक्ति सामाजिक नियमों के अनुकूल नहीं है। सामाजिक प्रतिबंधों के कारण सामान्य जीवन में हम अपनी प्रकृत वासनाओं की इच्छानुसार पूर्ति नहीं कर पाते। इसीलिए उनका दमन किया जाता है, किंतु दमन द्वारा उस मूल प्रवृत्ति का नाश होने के बजाय वह ज्ञात मन से निकलकर अज्ञात मन की संपत्ति बन जाती है। विचार जब अचेतन मन में चले जाते हैं तब व्यक्ति उन्हें अवचेतन में आने से रोक लेता है। विचारों के अवरोधन का यह कार्य सैंसर द्वारा होता है। सैंसर की यह प्रक्रिया जो अवांछनीय तथा असामाजिक तत्व को अचेतन मन में आने से रोकती है सैसंर कहलाती है।

अचेतन मन की कार्य -पद्धति :-

अचेतन मन की कार्य-पद्धतियों में दस प्रमुख हैं जो अज्ञात मन की रक्षा के हेतु क्रियामान होती है। बहिस्कृत इच्छाओं को अज्ञात मन की कार्य पद्धतियाँ वह रूप देती हैं जो उन्हें मान्य हो। यह पद्धतियाँ कामभाव से संपन्न कामशक्ति -लिबिडो- को प्रकृत माध्यम के स्थान पर कुछ और विषयवस्तु देती हैं। कामभाव से निवृत्त कामशक्ति इस कार्य पद्धति से वह रूप धारण कर लेती है जो अहं से समन्वित हो। ये बिना परिमार्जित कामशक्ति को बिल्कुल नहीं आने देती। अचेतन मन की प्रमुख कार्यपद्धतियाँ यों हैं - `विधापन, संक्षिप्तीकरण, तादात्म्य, प्रक्षेपण, प्रतीकीकरण, कल्पना-क्रिया, युक्त्याभास, बद्धत्व, प्रत्यावर्तन, उदात्तीकरण आदि।

2. लिबिडो :-

फ्रायड ने वर्णन की सुविधा के लिए मस्तिष्क को स्थूल यंत्र मान लिया है। इसमें इदम, अहम तथा परम अहम का स्थान निर्धारित है। मस्तिष्क का अधिक भाग इदम कहलाता है। इदम व्यक्ति के जन्मजात गुण एवं शारीरिक शक्ति का स्रोत है। व्यक्ति की प्रथम मानसिक अभिव्यक्तियाँ इदम से प्रभावित होती हैं। यह मन का अज्ञात भाग है, व्यक्ति को इसकी लेशमात्र भी चेतना नहीं होती। व्यक्ति की दमित इच्छाओं और वासनाओं का आधार इदम ही है। इसका संबंध व्यक्ति की काम शक्ति से है। फ्रायड के अनुसार यह काम-शक्ति ही लिबिडो है। मानव मस्तिष्क तथा उसके संपूर्ण व्यक्तित्व को संचलित करनेवाली मूल शक्ति फ्रायड के शब्दों में `लिबिडो` है। फ्रायड के अनुसार - " Freud orqinally gave the term Libido to that group of instincts which specifically determine the psycho sexual life of the individual Libido is, therfore a synonym for "sexual Instinets"[19]

प्रौढ़ व्यक्ति में विस्तृत रूप से तीव्र कामेच्छा पायी जाती है। यह कामेच्छा प्रजनन का रूप है। फ्रायड ने कामशक्ति अथवा प्रजनन के स्वरूप को ही लिबिडो कहा है। व्यक्ति के मस्तिष्क तथा उसके समस्त व्यक्तित्व का परिचलन लिबिडो द्वारा ही होता है। इसीलिए इसे मूल शक्ति कहा जाता है। लिबिडो शक्तिसंपन्न शक्ति है, जो व्यक्ति के बाह्य जीवन में अपनी अभिव्यक्ति के लिए सदैव तत्पर और उत्सुक रहती है।

इदम का आधार सुख-सिद्धांत है। लिबिडो की शक्ति स्वार्थमूलक तथा वासनापूर्ण होने के कारण समाज के नैतिक नियमों में बंधना नहीं चाहती। परंतु चेतना या अहम इसपर नियंत्रण करता है। अहं व्यक्ति की चेतना से संबंधित है तथा यह व्यक्ति के आचार-विचारों को नैतिकता एवं आदर्श की ओर उन्मुख करता है। फ्रायड के अनुसार लिबिडो व्यक्ति की कामुकता से संबंधित है। वह लिबिडो को अतिव्यापक अर्थ में प्रयोग करता है। उसने `काम` के अंतर्गत उन समस्त व्यवहारों तथा कार्यों की गनना की है जो सामान्य रूप से प्रेम तथा सुख के द्योतक हैं। फ्रायड व्यक्ति के उन समस्त कार्यकलापों को जिससे सुख प्राप्त होता है उसे कामुक कहता है।

लिबिडो की परिधि में नर-नारी के लैंगीक आकर्षण को ही नहीं अपितु वात्सल्य, स्नेह,

सहानुभूति आदि भावों को भी शामिल किया जाता है। यह शक्ति जीवन में बचपन से ही सक्रिय रहती है। अत: शिशु में जन्म के साथ कामभावों की उत्पत्ति हो जाती है और उसकी पूर्ति के लिए वह साधन भी निकाल लेता है। सर्वप्रथम बालक की काम-वासना शरीर के किसी स्थान पर नहीं रहती किंतु कुछ ही दिनों बाद वह शरीर के विशिष्ठ स्थानों में केंद्रित हो जाती है। फ्रायड ने कामप्रवृत्ति के विकास को चार अवस्थाओं में बाँटा है। उन्हें विश्लेषित करते हुए डॉ. धनराज मानधाने लिखते हैं - ``फ्रायड ने कामप्रवृत्ति के विकास को चार अवस्थाओं में बाँटा है - (1)विशृंखल (2) मौखिक (3) गुदास्थानीय (4) जननेंद्रियावस्था। पहली अवस्था में तो कामवासना त्वचा पर चारों ओर धितराई रहती है। परंतु दूसरी अवस्था में मुख उसका केंद्र बन जाता है। सुधा-तृप्ति के बाद भी स्तन को मुँह में रखना, अँगूठे को चूसना, जिस-तिस चिज को मुँह में रखना आदि क्रियाएँ मानों अप्रत्यक्ष रित्या कामवासना की पूर्ति है। तत्पश्चात वह मल-निस्सरण क्रिया में नियंत्रण कर आनंद प्राप्त करता है। और अंतिम अवस्था में वह अपने जननेंद्रिय में दिलचस्पी लेने लगता है, उससे खेलता है। विश्व का हर बालक इस अवस्था से गुजरता है।``[20]

इन अवस्थाओं का स्वाभाविक विकास व्यक्तित्व को स्वस्थ बनाता है और अस्वाभाविक विकास व्यक्तित्व के गठन को अस्वस्थ। जैसे अगर किसी बालक की इंद्रिय कामवासना दमित होगी तो वह आवश्यकता से अधिक धार्मिक और नीतिपरायण होगा। लगभग दो वर्ष की अवस्था में बालक की काम शक्ति माता की ओर और बालिका की पिता की ओर केंद्रित होने लगती है लेकिन यह भावना असामाजिक होने से इसका दमन होता है। लिबिडो के इस दमन के फलस्वरुप बालक के मन में इडिपस ग्रंथि और बालिका में इलेक्ट्र ग्रंथि जम जाती है।

3. इदीपस ग्रंथि :-

फ्रायड की मान्यता है कि शिशु में उसकी प्रारंभिक अवस्था में इदीपस ग्रंथि का विकास हो जाता है। यह अवस्था शिशु की लिंगप्रधान अवस्था है। शिशु का शैशव-काल लैंगिकता की चरमावस्था माना गया है। फ्रायड के अनुसार इस अवस्था में बालक माता के प्रति तथा बालिका पिता के प्रति आकृष्ट होती है। प्रेम की इस प्रतिक्रिया स्वरुप पुत्र पिता से तथा पुत्री माता से घृणा करने लगती है।

फैनीकल के अनुसार इदीपस ग्रंथि पर पारिवारिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश का

पूर्ण प्रभाव पड़ता है। जुंग, इदीपस ग्रंथि तथा मातृ ग्रंथि को अधिकार ग्रंथि कहता है क्योंकि बालक माता पर अधिकार का प्रदर्शन करता है। माता का संतान के प्रति अधिक प्यार ही इस ग्रंथि के विकास का प्रमुख कारण है। इस ग्रंथि का नामकरण संस्कार फ्रायड ने इदीपस नाम व्यक्ति के आधार पर किया है।

फ्रायड के साथ-साथ मनोविज्ञान के क्षेत्र में युंग तथा एडलर का भी अपना महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

2.4 मनोविज्ञान का महत्त्व :-

साहित्य क्षेत्र में हर एक रचना का अपना महत्त्व होता है। मनोविज्ञान भी इसे अपवाद नहीं है। वर्तमान परिस्थिति में विषमताओं से युक्त जीवन जीते समय बहुत मानसिक मनोविकारों को साथ लेकर मनुष्य को जीना पड़ रहा है। ऐसी परिस्थिति में मनोविज्ञान का अपना महत्त्व और भी बढ़ जाता है।

आधुनिक मनोविज्ञान की सीमाएँ समय के साथ-साथ निरंतर विस्तृत तथा व्यापक होती जा रही है। प्रारंभ में मनोविज्ञान के अध्ययन का विषय केवल चेतना तक सीमित था परंतु समय-समय पर चेतना की क्रियाओं का ज्ञान करते हुए वैयक्तिक भेदों को ज्ञात करने के लिए भी उत्सुक हो गया है। फ्रायड के मनोविश्लेषण के द्वारा मानसिक चिकित्सा के क्षेत्र में पर्याप्त सुधार हुए। अब मनोविज्ञान का क्षेत्र असामान्य व्यवहार तथा स्नायु रोगों की चिकित्सा से और आगे बढकर गैस्टाल्टवाद के रूप में व्यक्ति की समग्रता को ज्ञात करने तक विस्तृत हो गया है। प्रयोजनवादी-मनोविज्ञानवेत्ता व्यक्ति के व्यवहार में प्रयोजन के महत्त्व को स्थापित करने का प्रयास करने लगे, परंतु दूसरी ओर मनोविज्ञान जीवित प्राणी के क्षेत्र तक ही सीमित रहकर संतुष्ट नहीं था, उसने अपनी सीमायें अधिक व्यापक कर मृत्यु के उपरांत परलोक में आत्मा के रहस्यों को ज्ञात करने का बीडा उठा लिया है। संभवता निकट भविष्य में ही परलोक के रहस्यों का सफल उद्घाटन होगा। इस रूप में मनोविज्ञान का महत्त्व और भी बढ गया है।

2.5 मनोविज्ञान का उद्देश्य :-

हर रचना के पिछे रचनाकार का उद्देश्य होता ही है। भले उसमें मनोरंजन का पुट ही विद्यमान क्यों न हो। हम अपने नीजि जीवन में भी बगैर किसी उद्देश्य के एक कदम भी आगे नहीं बढा

सकते। अत: उद्देश्य के बगैर कोई चीज या कोई काम हो ही नहीं सकता। इसी के तहत मनोविज्ञान भी अपना उद्देश्य रखता है।

किसी भी विज्ञान का प्रयास प्रमुखत: ज्ञान प्राप्ति ही होता है। `मनोविज्ञान` विज्ञान होने के कारण उसका भी मुख्य उद्देश्य मानव वर्णन और उसका अनुभव विषयक वैज्ञानिक ज्ञान अर्जित करना ही रहता है। शास्त्रीय ज्ञान अर्जित करना अर्थात मानव वर्तन का उसके अनुभवों का निरीक्षण कर, उसपर विविध प्रयोग कर तत्संबंधी उचित नियमों की स्थापना करना है। अत: मनोविज्ञान का प्रधान लक्ष्य मानव वर्तन और उसके अनुभवों का निरीक्षण कर उसपर सम्यक विचार प्रस्थापित करना है।

मनोविज्ञान के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए डॉ. कमला आत्रेय लिखती हैं - ``आधुनिक मनोविज्ञान मनोविश्लेषण के द्वारा असाध्य मानसिक स्थितिवाले व्यक्तियों की मानसिक चिकित्सा करके विश्व के लिए स्वस्थ व्यक्ति तैयार करता है। शरीर तथा मन के अविच्छिन्न संबंध को स्वीकार कर व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना ही आधुनिक मनोविज्ञान का प्रथम तथा प्रमुख लक्ष्य है।``[21]

मनोविज्ञान के द्वारा बालक के महत्त्व को ध्यान में रखकर उसके समुचित विकास की प्रेरणा देता है। इस प्रकार इसका लक्ष्य भविष्य के लिए सुयोग्य नागरिक उत्पन्न करना है। शिक्षा, न्याय, धर्म, अर्थ, समाज आदि के क्षेत्र की समस्याओं क समाधान कर देश तथा विश्व की उन्नति के लिए द्वार खोलना ही आधुनिक मनोविज्ञान का उद्देश्य है। इसी प्रकार वर्तमान परिस्थिति में मनोविज्ञान के उद्देश्यों को और भी प्रस्तुत किया जा सकता है।

2.6 मनोविज्ञान की उपयोगिता :-

मनोविज्ञान की उपयोगिता और सार्थकता सर्वश्रुत है। इसका अस्तित्व सर्वत्र विद्यमान है। इसकी प्रमुख उपयोगिता है मानव मन के तह तक जाकर मनुष्य जीवन के सर्वांगीन पहलुओं का अध्ययन कर उसमें सुधार हेतु निश्चित कदम उठाना। मनोविज्ञान की उपयोगिता में प्रमुखत: इन ब्योरों की ओर ध्यान दिया जा सकता है।

1. मानव शिक्षा एवं सुधार :- इसमें शिक्षा के अंतर्गत बालकों का वंशप्रदत्त गुण, बुद्धिमत्ता, परिस्थिति,

व्यक्तित्व विकास के विविध पहलु आदि का सर्वांगीन अध्ययन किया जा सकता है।

2. वैद्यक और रोगपरिहार :- इसमें मरीज की मनस्थिति, उसके विचार, श्रद्धा, संगीत एवं विविध रंगों विषयक ज्ञान आदि पर विचार किया जा सकता है।

3. व्यवसाय एवं व्यवहार :- व्यापार के अंतगर्त मजदूरों का चूनाव, उनकी क्षमता, व्यापारी या मालिक-मजदूर संबंध आदि को मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखा जा सकता है।

इसके साथ-साथ जीवन के अन्य सभी क्षेत्रों में मनोविज्ञान की उपयोगिता सिद्ध होती है। जैसे- कायदा एवं सुव्यवस्था तथा काल एवं मनोरंजन आदि पर विचार किया जा सकता है। इस रूप में मनोविज्ञान की अपनी उपयोगिता सिद्ध होती है।

2.7 मनोविज्ञान और मनोविश्लेषण में परस्पर अंतर :-

कुछ विद्वान मनोविज्ञान और मनोविश्लेषण को एक ही कार्य में देखते हैं परंतु वास्तव में दोनों में काफी अंतर है। मनोविज्ञान के क्षेत्र में मनोविश्लेषण का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इसके प्रवर्तक सिग्मंड फ्रायड हैं। फ्रायड द्वारा प्रतिपादित मनोविश्लेषण मनोविज्ञान नितांत नवीन है क्योंकि इसके पूर्व इस विषय की ओर किसी अन्य मनोवैज्ञानिक का ध्यान नहीं गया था। फ्रायड के पूर्व मन की चेतनावस्था को प्रमुख माना जाता था, परंतु फ्रायड ने मन के अचेतन अंश को अध्ययन का विषय बनाया। मनोविश्लेषण पद्धति ने व्यक्ति के शैशव काल की प्रवृत्तियों तथा परिस्थितियों को महत्त्व दिया। मानसिक रोगों के कारण ज्ञात करके उनकी चिकित्सा करने में मनोविश्लेषण का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

मनोविज्ञान और मनोविश्लेषण में स्थित अंतर को स्पष्ट करते हुए डॉ. सुकृता अजमानी लिखती हैं - ``मनोविज्ञान और मनोविश्लेषण की अब तक की व्याख्या से स्पष्ट है कि मनोविज्ञान एक स्वतंत्र विज्ञान है जो मानव की चेतनावृत्ति के कार्य करने की प्रवृत्ति की व्याख्या करता है एवं मनोविश्लेषण उसकी एक शाखा विशेष है जिसका संबंध मनोरोगों की चिकित्सा पद्धति से है, जिसके अविष्कर्ता फ्रायड थे। फ्रायड का संबंध चिकित्सा क्षेत्र से था।``[22] मनोविश्लेषण मनोविज्ञान की एक शाखा विशेष है और मनोविश्लेषण में फ्रायड द्वारा की गई काम की व्याख्या काम की साधारण अवधारणा से पर्याप्त भिन्न है।

इस प्रकार मनोविज्ञान और मनोविश्लेषण का अंतर स्पष्ट हो जाता है।

निष्कर्ष :-

मनोविज्ञान वह विज्ञान हैं जिसमें मानव मन तथा उसके कार्यों की सैद्धांतिक और व्यावहारिक दृष्टि से सर्वांगिण व्याख्या की जाती है।

पहले- पहल मनोविज्ञान का रूप दार्शनिक ही था। उस पर वैज्ञानिक दृष्टि से कोई विचार नहीं हुआ था। लेकिन सोलहवी- सतरहवी शताब्दी के बाद अनेक मनोवैज्ञानिकों ने मनोविज्ञान को आधुनिक दृष्टिकोण से स्थापित किया है, जिसमें मनुष्य और उनका व्यवहार उनकी बुद्धि, उनकी आत्मा, चेतना, संवेदना तथा विचार इन सभी बातों को समाविष्ट कर दिया है।

आज मनोविज्ञान काफी विकसित रूप धारण करके सामने आया है। जिसके तहत मनोविज्ञान को अनेक शाखाओं में विभाजित किया गया है। जैसे कि - सैद्धांतिक मनोविज्ञान, व्यावहारिक मनोविज्ञान आदि। मनोविज्ञान के क्षेत्र में फ्रायड, एडलर, युंग आदि मनोवैज्ञानिकों ने मनोविज्ञान की अनेक पद्धतियों का निर्माण किया है। जिसके अंतर्गत मस्तिष्क मन की विविध अवस्थाओं पर विचार किया गया है।

वर्तमान परिस्थिति में विषमताओं से युक्त जीवन में मानसिक विकारों का अध्ययन करने के लिए मनोविज्ञान का ही सहारा लिया जाता है। मनोविश्लेषण के द्वारा मानसिक चिकित्सा क्षेत्र में पर्याप्त सुधार हुए हैं। अब मनोविज्ञान का क्षेत्र असामान्य व्यवहार तथा स्नायुरोगों की चिकित्सा से भी आगे बढकर गेस्टाल्टवाद के रूप में व्यक्ति की समग्रता को पहचानने तक विस्तृत बन गया है। इस दृष्टि से देखा जाय तो मनोविज्ञान का महत्त्व निर्विवाद है। मानसिक दृष्टि से कमजोर व्यक्ति का सर्वांगिण विकास करना ही आधुनिक मनोविज्ञान का प्रमुख लक्ष्य है। मनोविज्ञान की उपयोगिता देखी जाय तो मानव शिक्षा एवं सुधार तथा वैद्यक और रोग परिहार के साथ-साथ व्यवसाय तथा व्यवहार में भी यह उपयोगी सिद्ध होता है।

अत: मनोविज्ञान एक स्वतंत्र विज्ञान है, जो मानव की चेतनावृत्ति के कार्य करने की प्रवृत्ति की व्याख्या करता है।

: संदर्भ-सूची :

1. डॉ. हरदेव बाहरी - शिक्षक हिंदी शब्दकोश, पृष्ठ. 305

2. गोविंद चातक - आधुनिक हिंदी शब्दकोश, पृष्ठ. 418

3. डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त- हिंदी भाषा एवं साहित्य विश्वकोश खंड-2, पृष्ठ. 508

4. लालजीराम शुक्ल - सरल मनोविज्ञान, पृष्ठ. 4

5. डॉ. कमला आत्रेय - आधुनिक मनोविज्ञान और सूर-काव्य, पृष्ठ.14

6. वही, पृष्ठ. 16

7. डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त - हिंदी भाषा एवं साहित्य विश्वकोश खंड-2, पृष्ठ. 508

8. वही, पृष्ठ. 508

9. वही, पृष्ठ. 508

10. वही, पृष्ठ. 508

11. वही, पृष्ठ. 508

12. James Drever – A Dictionary of psychology, P. 227

13. The Oxford English Dictionary secondedifion, volume-XII, p. 766

14. डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त - हिंदी भाषा एवं साहित्य विश्वकोश, खंड-2, पृष्ठ. 509.

15. डॉ. कमला आत्रेय - आधुनिक मनोविज्ञान और सूर-काव्य,पृष्ठ. 20

16. डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त - हिंदी भाषा एवं साहित्य विश्वकोश, खंड-2, पृष्ठ. 510-511

17. डॉ. धनराज मानधाने - हिंदी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास, पृष्ठ. 60

18. डॉ. कमला आत्रेय - आधुनिक मनोविज्ञान और सूर-काव्य, पृष्ठ. 42

19. **Dr. A.A. Brill – "Introduction" Basic writings of sigmund freud-P. 18-19.**

20. डॉ. धनराज मानधाने - हिंदी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास, पृष्ठ. 63-64

21. डॉ. कमला आत्रेय - आधुनिक मनोविज्ञान और सूर-काव्य, पृष्ठ. 16

22. डॉ. सुकृता अजमानी - प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यासों में बाल-मनोविज्ञान, पृष्ठ. 14.

****